MIZORAM UNIVERSITY JOURNAL OF HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
A Refereed Bi-annual Journal
ISSN(P): 2395-7352
eISSN: 2581-6780
Vol. VI, Issue 2 (December 2020) http://www.mzuhssjournal.in/

Legendary Woman *Sita* and Indian Sensibility: Reading Mridula Sinha's *Sita Puni Boli*

Akhilesh Kumar Sharma*

Abstract

The Ramayana or Ramkatha is deeply entrenched in Indian tradition.Stories revolving around the legendary figure Ram and Sita penetrate through rural and urban, mundane and religious, sacred and secular domains. Sita is esteemed as a paragon of spousal and feminine virtues for all Hindu women and she is an epitome of power, self-control and self-respect. The story of Sita's life is retold in the form of Sita's autobiography by Mridula Sinha, a renowned writer in Hindi language. Her seminal work Sita Puni Boli (2007)is an autobiographical sketch of Sita instilled with deep Indian emotions and feelings. Sita as an ideal woman is best exemplified by this novel.Mridula Sinha has authored autobiographies of five Indian girls and Sita Puni Boli is one such novel from the series that defines, analyses and re-establishes Indian value system and the persona of Sita brings sense of value for family, society, culture, religion, environment etc. for Indian women. Hence, Mridula Sinha sets the ground for the great Indian tradition through this novel. The paper will focus on the importance of religion, necessity of morals and values in human life through the character of Sita.

Keywords*: Woman, Tradition, Indian Values, Sita, Pativrata Dharma, Patnivrata Dharma, Motherhood.*

*Assistant Professor, Department of Hindi, Mizoram University, Aizawl, Mizoram. Email: akhileshksharma82@gmail.com

भारतीय पौराणिक स्त्री पात्र सीता और मूल्य बोध: 'सीता पुनि बोली' उपन्यास के विशेष संदर्भ में

अखिलेश कुमार शर्मा[†]

शोध पत्र सार

भारतीय परंपरा में रामकथा जन-जन की जुबान पर है। रामकथा में राम के चरित के साथ सीता माँ का चरित भारतीय स्त्री को आत्मबल, आत्मसंयम और स्वाभिमान का अद्‌भुत पाठ पढ़ाता है। प्रत्येक भारतीय स्त्री सीता को अपना आदर्श मानती है। ऐसे पौराणिक स्त्री पात्र सीता के जीवन चरितको आत्मकथ्य शैली के कलेवर में प्रस्तुत किया है आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य की प्रतिष्ठित और शीर्ष लेखिका मृदुला सिन्हा ने'सीता पुनि बोली' उपन्यास में। यह उपन्यास भले ही पौराणिक स्त्री पात्र सीता के आत्मकथ्य रूप में हो; पर इसमें भारतीय भाव बोध की गहरी अनुभूति और संवेदना अंदर तक व्याप्त है। सीता माँ की आत्मकथा के जरिये मूल्य बोध का पाठ जनमानस के सामने प्रस्तुत किया गया है। भारतीय नारी के लिए एक आदर्श नारी पात्र की प्रस्तुति इस उपन्यास के आत्मकथ्य के माध्यम से बखूबी होती है। साथ ही आम जनमानस के जीवन में मूल्यधर्मिता की स्थापना करता यह उपन्यास अपने कथा के ढाँचे में भारत बोध के स्वर को प्रबल करता है। मृदुला सिन्हा ने भारतीय पौराणिक स्त्री पात्रोंपर आत्मकथ्य शैली में अपनी कलम चलाई है। उसी शृंखला में यह उपन्यास भारतीय जीवन मूल्यों को व्याख्यायित, विश्लेषित और रेखांकित करता है। मूल्य बोध की स्थापना करता यह उपन्यास भारतीय लोक की जीवंतता को भी प्रकट करता है। सीता की आत्मकथा और मूल्य बोध के बहाने स्त्री, परिवार, समाज, सांस्कृतिक चेतना, पर्यावरण चेतना और धार्मिक चेतना लोकमन की स्वीकार्यता को प्राप्त करती है। इसी स्वीकार्यता के साथ भारतीय जीवन मूल्य बोध की स्थापना करना मृदुला सिन्हा और उनके इस उपन्यास का महत उद्देश्य है।

बीज शब्द : स्त्री, परंपरा, भारतीय मूल्य, सीता, पतिव्रत धर्म, पत्निव्रत धर्म, मातृत्व।

[†] Assistant Professor, Department of Hindi, Mizoram University, Aizawl, Mizoram. Email: akhileshksharma82@gmail.com

आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में महिला कथाकारों की एक लंबी और मजबूत शृंखला विद्यमान है। इस शृंखला में दो विचारधाराओं को लेकर किया जाने वाला लेखन हमारे सामने आता है। एक, पश्चिम केंद्रित विचारधारा को लेकर किया जाना वाला लेखन और दूसरा, भारत केंद्रित विचारधारा को लेकर किया जाने वाला लेखन। मृदुला सिन्हा भारत केंद्रित विचार को प्रवाहित करने वाली शीर्ष कथाकार हैं। मृदुला सिन्हा भारत के बिहार प्रदेश से आती हैं। बिहार के लोक अंचलसे साहित्यिक ऊर्जा ग्रहण करती हैं। मृदुला सिन्हा अपने गाँव-कस्बाई संस्कृति से लेकर शहर और दिल्ली महानगर तक की यात्रा करती हैं। समाज, साहित्य और राजनीति तीनों ध्रुवों पर भारतीय लोक की ध्वजा को फहराने का कार्य उनकी विशिष्टता को दर्शाता है।

मृदुला सिन्हा ने गाँव-शहर की कहानियाँ भी लिखीं हैं, तो भारतीय समाज की जीवंत परंपरा और संघर्ष को लेकर उपन्यास भी। निबंध और लेख में वे अपने संस्मरण को पिरोकर आत्मीयता का सोता प्रवाहित करती हैं। जीवनी के क्षेत्र में भी उन्होंने अपनी लेखनी को मजबूती प्रदान की है। हिन्दी काव्य संसार में एक काव्य संग्रह के साथ डुबकी लगाई है।

मृदुला सिन्हा के अब तक सात उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं– ज्यों मेहंदी को रंग, घरवास, अतिशय, सीता पुनि बोली, विजयिनी, परितप्त लंकेश्वरी और अहल्या उवाच। मृदुला जी के प्रथम तीन उपन्यास अलग-अलग पृष्ठभूमि को लेकर लिखे गए हैं। पर, उसके बाद 'सीता पुनि बोली' से लेकर 'अहल्या उवाच' तक के चार उपन्यास भारतीय पौराणिक स्त्री पात्रों पर केंद्रित हैं।भारतीय पौराणिक स्त्री पात्रों पर केंद्रित शृंखला की अगली कड़ी में मृदुला सिन्हा का पाँचवाँ उपन्यास शीघ्र ही आने वाला है।

इस शोध पत्र के केंद्र में 'सीता पुनि बोली' उपन्यास है। 'सीता पुनि बोली' उपन्यास सीता माँ का आत्मकथ्य है, जिसे मृदुला सिन्हा ने रामकथा को आधार बनाकर लिखा है। आदिकवि वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण', गोस्वामी तुलसीदासकृत 'रामचरितमानस' और जनश्रुतियों एवं गाथाओं में वर्णित रामकथा के द्वारा पुन: सीता माँ के मन के भावों को टटोलने, आँकने और शब्दबद्ध करने का प्रयास किया है'सीता पुनि बोली' नामक इस आत्मकथ्यात्मक उपन्यास में। जिसमें लेखिका ने सीता माँ के जन्म एवं बचपन से लेकर मातृत्व प्राप्ति तक की कहानी को स्वयं सीता माँ के शब्दों में वर्णित किया है।

मृदुला सिन्हा अपनी शैली में सीता माँ का परिचय देती हुई कहती हैं- "जनकपुर के विदेहराज जनक की दुलारी, राम की सहधर्मिणी, दशरथ और कौशल्याकी अत्यन्त प्रिय पुत्रवधू, लक्ष्मण,भरत और शत्रुघ्न की माँ सदृश भाभी, राजमहल से लेकर वन और आश्रम के जीवन में अनेक सामाजिक संबंधों से बँधी सीता की स्मृति त्रेतायुग से प्रवाहित होती हुई आज भी जन-जन के हृदय

और भारतीय जनमानस में रची बसी है।"[1]यहीस्मृतियों और संवेदना का प्रवाह'सीता पुनि बोली' उपन्यास के सर्जन की डगर है।

सीता माँ की तेजस्वी और शौर्यपूर्ण जीवंत स्मृतियों को अत्यन्त मार्मिक, कारुणिक एवं हृदयस्पर्शी ढंग से चित्रित करता यह उपन्यासभारतीय नारी के मातृत्व, आत्मबल, आचरणशीलताऔर पतिव्रतधर्म को तो प्रतिष्ठित करता ही है,साथ ही भारतीय लोक और शास्त्रीय परंपरा के जीवन के मूल्यों को दोहराता है, रेखांकित करता है।

जिस तरह गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में'रामकथा' को सात खंडों (बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किंधाकांड, सुंदरकाण्ड, लंकाकांड, उत्तरकांड) में संजोया है,ठीक उसी तरह मृदुला सिन्हा ने सीता माँ की आत्मकथाको सात'उत्सवों'में संजोया है: –

1. मिथिलोत्सव (आठ अध्याय)
2. अवधोत्सव (चार अध्याय)
3. वनोत्सव (चार अध्याय)
4. लंकोत्सव (चार अध्याय)
5. राज्योत्सव(तीन अध्याय)
6. आश्रमोत्सव (चार अध्याय)
7. मातृउत्सव (दो अध्याय)

महाप्रयाण – उक्त 'उत्सव-खंडों' में वर्णित माँ सीता का आत्मकथ्य वर्तमान संदर्भ में मानवजीवन के विविध पक्षों को हमारे सामने जीवंत करता मूल्य बोध का हृदयस्पर्शी पाठ पढ़ाता है।

जब हम अपने जीवन में मूल्य बोध की बात करते हैं तो हमें अपनी माँ का चेहरा सबसे पहले याद आता है। माँ इस दुनिया में ईश्वर का प्रतिरूप होती है।वह संसार की सबसे अनुपम कृति है। वह अपनी संतान को जन्म देकर ही माँ नहीं बनती; बल्कि अपने अंदर की सर्जन एवंपालन की शक्तियों से माँ का स्वरूप धारण करती है।

मातृत्व भाव को वंदनीय बताते हुए मृदुला सिन्हा 'स्त्री' से ऊपर माँ को विराजमान करती हुई कहती हैं – "माँ स्त्री से ऊपर होती है। मातृत्व-भाव सभी भावों का जनक है। अपनी कोख से संतान उत्पन्न किए बिना कोई स्त्री माँ नहीं बन सकती। उसके अंदर मातृत्व भाव जगना चाहिए। ..... माँ का भी मातृत्व भाव तब तक श्रद्धापूर्ण नहीं होता,जब तक उस माँ को सभी बच्चे अपने जैसे नहीं लगते। यही वह मातृत्व भाव है, जो वंदनीय है।"[2]

मातृत्व प्राप्ति के लिए विवाह करना पड़ता है, जो एक अनुष्ठान की भाँति होता है।विवाह के मिलन में वासना हो सकती है; पर मातृत्व-प्राप्ति मेंनहीं। मातृत्व अहंपूर्ति के लिए नहीं, अपितु समाज हित की पूर्ति के लिए होता है।

माँ को पत्नी से श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। इस बारे में मृदुला सिन्हा स्वयं सीता के शब्दों में कहती हैं– "पत्नी से माँ का स्थान ऊपर है और नारी के अन्दर पत्नी से बढ़करउत्कृष्ट इच्छा माँ बनने की होती है।"[3] नारी के जीवन में माँ बनना उसके जीवन का एक धर्म है, जिसे उसे धारण करना होता है, अपनाना पडता है। माँ बनने पर ही नारी पूर्ण बनती है। उसके बाद न कोई उसका दायित्व शेष रहता है, न ही कोई उसकी परीक्षा बाकी रहती है।

मृदुला सिन्हा इस उपन्यास के अंत में सीता के धरती में विलीन होने से पहले स्वयं सीता से घोषणा करवाकर 'मातृत्व' को सत्य, शिव एवं सुंदर बताती हैं–"माँ के सत की घोषणा नहीं होती और परीक्षा भी नहीं। माँ तो माँ ही होती है। उसी के गर्भ से संतान पैदा होती है। यह सत्य है और इसलिए मातृत्व शिव एवं सुंदर भी है।"[4]

मृदुला सिन्हा ने 'सीता पुनि बोली' उपन्यास में सीता का माँ के गर्भ से जन्म नहीं होने के उपरान्त भी सीताजन्म के विषय को मातृ-उत्सव के गान-उल्लास से भर दिया है। अयोनिजा होने पर भी सीता के नाम मैथिली, भूमिजा, मिथलेशकुमारी और वैदेही उसे 'बेटी' बनाते हैं और धरती को उसकी माँ।

मृदुला सिन्हा मातृत्व को एक पुरुषार्थ के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए सीता के पति मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम से कहलवाती हैं - "स्त्री को पृथ्वी पर मातृत्व भाव के प्रचार–प्रसार व विस्तार के लिए ही भेजा गया है .... उसके अंदर सर्जन, पालन और संहार की शक्तियाँ हैं। मातृत्व इन शक्तियों का पर्याय है। हर स्त्री जननी के साथ-साथ जगज्जननी भी हो सकती है, यदि उसने मातृत्व धर्म को निभाया हो..... मातृत्व भी एक पुरुषार्थ है।"[5]

गहनतम पीड़ा के बाद माँ बनने के अति आनंददायी क्षण को मृदुला सिन्हा गहन तपस्या का परिणाम बताती हुई स्वयं सीता के माँ बनने पर सीता के हृदयनिष्ठ परमानंद को व्यक्त करती हुई स्वयं सीता से कहलवाती हैं - "आधी रात हो गई। मैं पीड़ा से बैचेन हो रही थी। इतनी सघन पीड़ा थी कि मन वीतरागी हो उठा। राग-द्वेष से परे। संज्ञाशून्य तन और मन वैरागी हो गया। बिल्कुल शांत। मेरी दृष्टि के सामने मेरा स्वप्न .... गंगा मैया, राम-लक्ष्मण थे। इतनी तीव्र पीड़ा कि उसकी अनुभूति के लिये संज्ञा भी नहीं थी और घनीपीड़ा का अंत बच्चे के केंहा-केंहा में हुआ। .... मेरी तपस्या का फल मिला। एक विशेष परमानन्द की प्राप्ति हुई।"[6]

यहाँ 'सीता' एक भारतीय नारी के रूपमें उपस्थित है। आज देखने में आ रहा है कि भारतीय नारी पश्चिम के प्रभाव से 'माँ' बनने के स्वर्गीय सुख से वंचित होना चाह रही है। जबकि नारी के

लिए 'माँ' बनना एक गौरव की बात है। नारी का पुरुषार्थ है- माँ बनना। मृदुला सिन्हा इसी मूल्य को सर्वोत्तम और शक्तिशाली नारी पात्र (सीता) के मुँह से स्वीकार करवाती हैं - "नारी की पूर्णता माँ बनने में है।"[7]

माँ के बाद आती है व्यक्ति की जन्मभूमि। उसकी माटी। 'माटी' (जड़ों) से जुड़ाव व्यक्ति के जीवन का एक मूल्य है। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावी बनाने के लिए माँ, मातृभूमि और मातृभाषा का प्रमुख योगदान होता है। अपनी मिट्टी से कटा व्यक्ति कहीं पर भी सम्मान का पात्र नहीं होता।

मृदुला सिन्हा श्रीराम के मुख से इस गर्वीली बात को स्वीकार करवाती हैं - "हमारी जन्मभूमि! इससे बढकर स्वर्ग भी नहीं हो सकता।"[8] वर्तमान संदर्भ में हम बात करें तो व्यक्ति चाहे कितना ही विदेश सुख भोगले, कितना ही देश से बाहर भ्रमण कर ले एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर का अनुभव प्राप्त कर ले; परन्तु उसकी पहचान तो अपनी जन्मभूमि से ही होती है।

जीवन के अन्तिम क्षणों में उसे अपनी मातृभूमि की ही गोद में सहारा लेना होता है। सीता भी जब वनवास के दौरान अपनी माँ धरती पर सोती हैं, तो उस सुख को अपने जीवन के एक मूल्य के रूप में देखती हैं- "जीवन में पहली बार मैं धरती पर सो रही थी। धरती से शरीर का लगाव हुआ था। मानो उसकी गोद में सोई होऊँ। मुझे जन्म देने वाली धरती की कोख एक बार फिर स्मरण हो आई।"[9]

तुलसीदासकृत रामचरितमानस में श्रीराम अपनी जन्मभूमि (अवधपुरी) को वैकुण्ठ से भी प्रिय बताते हुए कहते हैं-

"जद्यपि सब बेकुंठ बखाना। वेद पुरान विदित जगु जाना।
अवधपुरी सम प्रिय नहीं सोऊ। यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ॥
जन्मभूमि मम पुरि सुहावनि। उत्तर दिसि बह सरजू पावनि।
जा मज्जन ते बिनहिं प्रयासा। मम समीप नर पावहिं बासा॥"[10]

व्यक्ति का अस्तित्व बिना जन्मभूमि के कहीं का नहीं है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपनी मातृभूमि का कर्ज नहीं भूलना चाहिए। मातृभूमि-प्रेम को सतत बनाए रखना मानवजीवन का एक उत्कृष्ट मूल्य है। जन्मभूमि से लगाव, जुड़ाव, 'सीतापुनि बोली' उपन्यास में अनेक स्थानों पर वर्णित हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी मातृभूमि से जुड़कर राष्ट्र के विकास में योगदान दे सकता है।

मातृभूमि से ही मातृभाषा जुड़ती है। जिस क्षेत्र में व्यक्ति जन्म लेता है, वहाँ की क्षेत्रीय भाषा/बोली ही उसकी मातृभाषा होती है जिसमें वहतुतला-तुतलाकर अपनी आवाज मुखर करता है। व्यक्ति के जीवन-विकास में मातृभाषा का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। जहाँ भी वह जाता है, वहाँ उसकी पहचान मातृभाषा से होती है।

जब वह किसी को अपना जन्मस्थान बताता है, तब स्वत: ही उसके मुख से मातृभाषा फूट निकलती है। मृदुला सिन्हा मनुष्य जीवन में मातृभाषाप्रेम को एक चिरसंचित मूल्य के रूप में संजोते हुए सीता विवाह के शुभ अवसर पर गुनगुना उठती हैं -

"गंगा व जमुना से जल भी लाओ

भरी-भरी सीय को नहाऊँ, मेरी प्यारी लली को।

करके शृंगार सिया भई सुंदर,

प्रियतम से उनको मिलाओ, मेरी प्यारी लली को।"[11]

बेटी के विवाह पर माँ हुलस-हुलसकर सुख-दु:ख को अपनी मातृभाषा में इस प्रकार व्यक्त करती है-

"धन लेले बेटी, धर्म भी लेलो

हरि लेले पिताजी के ज्ञान हे।"[12]

बचपन से जिस भाषा को बालक सुनता-गुनगुनाता है, पढ़ता-लिखता है, उसी भाषा में उसकी सहज अभिव्यक्ति होती है। जन्म से सीखी हुई भाषा के संस्कार उसके जीवन में उतरते चले जाते हैं, जिससे उसका जीवन मूल्यवान बन जाता है, मूल्यपरक बन जाता है। मातृभाषा से अपनापन, दया, कोमलता, विनम्रता, संतोष, आदर-सम्मान, धैर्य, प्रेम, साहस, विश्वास जैसे जीवन-मूल्य पनपते हैं।

मातृभाषा में जीवन के संस्कार छिपे होते हैं। इसलिए बालकों की प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में ही करवायी जानी चाहिए। जिससे वे अपने जीवन को संस्कारवान बना सकें। हाल ही (जुलाई, 2020) में पारित हुई राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी इस बात पर बल देती है।

मृदुला सिन्हा ने 'रामकथा' में वर्णित सीता को सर्वप्रथम बचपन में अपनी माँ से मातृभाषा में ही सुना था-

"साग-पात की बाडी। लक्ष्मणजी रखवाली।

सीताजी रसोइया। कीडा-मकोडा सड जाय।"[13]

बचपन में हम जिस भाषा में तुलना-तुतलाकर बोलना सीखते हैं, वही भाषा हमारा आधार स्तंभ बनती है। व्यक्ति अपनी मातृभाषा से जुड़कर जीवन को बहुमुखी दिशा प्रदान कर सकता है। हमारे जीवन का अनिवार्यएवं अपरिहार्य मूल्य है कि हम अपनी मातृभाषा से जुड़े रहें। मातृभाषा हमारे लिए गर्व की भाषा है, जिसे हमें सभी भाषाओं में सर्वोच्च स्थान प्रदान करना चाहिए।

मानवजीवन में जब-जब मूल्य बोध की बात होगी, तब-तब वचन निष्ठा का सवाल हमारे सामने जरूर आयेगा। अपने वचन का पालन करना प्रत्येक मनुष्य का धर्म है, कर्त्तव्य है। मनुष्य के जीवन का मूल्य है कि वह लाख विपदा एवं कठिनाई आने पर भी अपने वचन का पालन करे, चाहे इसके लिए उसे कुछ भी त्याग करना पडे। संसार के समस्त सुख वचनपालन के लिये न्यौछावर करने पडें तो भी कोई बात नहीं, परन्तु मनुष्य को अपने वचन पर अडिग रहना चाहिए। 'रामचरितमानस' में इस बात के स्पष्ट संकेत मिलते हैं -

"रघुकुल रीति सदा चलि आई।

प्रान जायँ बरु वचनु न जाई॥"[14]

मृदुला सिन्हा वचन-पालन के मूल्य को श्रीराम के मुख से प्रतिष्ठित करवाती हैं।श्रीराम अपनी माँ कौशल्या से कहते हैं–"माँ ..... पिताजी से कभी उन्होंने (कैकयी माँ) दो वचन लिये थे।"[15] उन्हीं वचनों के पालन के लिए पिताजी ने छोटी माँ (कैकयी) की इच्छानुसार भरत को राजसिंहासन और मुझे चौदह वर्ष का वनवास दिया है।

राजा दशरथ अपने वचन-पालन के लिये अपने प्रियपुत्र श्रीराम को वनवास देते हैं और उसी ग़म में अपने प्राण भी त्याग देते है। हम अपने जीवन में या तो वचन दें ही नहीं और दें तो उस वचन का पालन हमें अपने प्राण देकर भी निभाना चाहिए। यह मूल्य बोध की स्थापना है जिसे राम कथा के अनुसार मृदुला सिन्हा 'सीता पुनि बोली' उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे समाज के बीच रहकर परस्पर संबंधों का निर्वाह करना पड़ता है। पास-पड़ौस में, घरमें, नाते-रिश्तेदारी में मनुष्य को अपने संबंधोंको निभाना पडता है।यह उसका नैतिक जीवनमूल्य है।

मृदुला सिन्हा अपने 'सीता पुनि बोली' उपन्यास में कहती हैं – "जैसे-जैसे रामकथा आगे बढ़ती है, सीता का व्यक्तित्व विस्तृत होता जाता है। बेटी, बहू, पत्नी, भाभी की भूमिकाओं में सीता की ममतामयी आकृति ही उभरी है।"[16] मृदुला सिन्हा ने राम कथा के अनुसार सीता के चरित्र को बेटी, बहू, पत्नी, भाभी की भूमिकाओं में उभारकर परस्पर संबंध निर्वाह रूपी जीवनमूल्य स्थापित किया है।

पिता-पुत्री, पिता-पुत्र, पति-पत्नी,भाई-भाई, बहिन-बहिन, राजा-प्रजाके बीच उचित संबंधनिर्वाह से जीवन में समरसता और सामंजस्य स्थापित होता है। इसलिए व्यक्ति को परस्पर अपने-अपने संबंधों का उचित निर्वाह करना चाहिए। आज के परिप्रेक्ष्य में यदि व्यक्ति अपने संबंध एवं दायित्व का उचित निर्वाह करले तो परस्पर द्वेष और कटुता के वातावरण की जगह सामाजिक समरसता स्थापित हो सकेगी।

वर्तमान में स्त्री सशक्तिकरण के नाम पर एक दोहरा अलाप अलापा जा रहा है। दोहरा इसलिए कि घर में कुछ, बाहर कुछ। अपने घर कि तरफ नहीं झाकेंगे, पड़ोस की तरफ टकटकी लगाकर देखेंगे। कहेंगे कुछ, करेंगे कुछ। यह दोहरा चरित्र स्त्री सशक्तिकरण का शंख फूंख रहा है।

मृदुला सिन्हा भारतीय परंपरा की सिरमोहर नारी पात्र सीता को प्रस्तुत करती हुई कहती हैं - "सीता (नारी) का जीवन स्वयं सृष्टि की अमूल्य, अक्षय और अमर रचना है।"[17]जब नारी में सर्जन, पालन और संहार की शक्ति होती है। एक तरह से वह सर्वशक्तिसम्पन्न है। तो क्यूँ नारी को अबला समझा जाता है, नारी पर अत्याचार ढाए जाते हैं, नारी को भोग्या समझा जाता है, यह धारणा नारी के पक्ष में नहीं है। नारी तो स्वयं अपने आप में सर्जक है। असल में ऐसा करने वाले-बोलने वाले अपना स्वयं का विश्लेषण करें तो ज्यादा बेहतर होगा।

नारी को शक्तिरूपेण मातृरूपेण कहा गया है। नारी की इसी शक्ति को भारतीय नारी के जीवन-मूल्य के रूप में स्थापित करती हुई मृदुला सिन्हा कहती हैं - ऐतिहासिक भारतीय नारी (सीता) की आत्मिक शक्ति ..... आज की साधारण नारियों का संबल और धरोहर है।ये पंक्तियाँ आज की नारियों के जीवन में आत्मविश्वास का संचार करती हैं और आत्मबल को एक जीवन-मूल्य के रूप में स्थापित करने में अपना योगदान देती हैं।

आचरण मनुष्य जीवन की आधारशिला है। व्यक्ति को उसका चरित्र ही पूज्य बनाता है। जैसे व्यक्ति को संस्कार मिलते हैं, वैसे ही उसके आचरण में निखार आता चला जाता है। जीवन एक यज्ञ की भाँति होता है। इसमें हमारे सदाचरणों की आहुति लगती है। मृदुला सिन्हा ने सीता को संस्कारो में पगी हुई चित्रित किया है। सीता है ही संस्कारशील। भारतीय आदर्श नारीपात्र। एकपतिव्रतधर्मिणी।

सीता कहीं भी रही, सभी जगह उसने अपने आचरण से विजयप्राप्ति की। चाहे वह वनवास का समय हो या राम द्वारा परित्याग करने का समय। सभी सम-विषम परिस्थितियों में उसने अपने आचरण को सदैव पवित्र रखा। तभी जाकर वह आज भारतीय नारी समुदाय के समक्ष आदर्श आचरण की अनुकरणीय मिसाल है।

भारतीय नारी के जीवन में पातिव्रत धर्म की संकल्पना परम्परागत रूप से ग्राह्य रही है। यह धर्म नारी को दिव्य स्वरूप प्रदान करता है।स्त्री अपने जीवन में एक पुरुष को अपने पति के रूप में वरण करती है और संपूर्ण जीवनकाल में उसी पुरुष के साथ पातिव्रत्य धर्म का पालन करती है। यह शक्ति-धर्म ही भारतीय-स्त्री को विशिष्ट एवं प्रेरक बनाता है।

मृदुला सिन्हा ने सीता के मुख से कहलवाया है कि "अब स्वप्न में भी दूसरे राजकुमार के दर्शन नहीं करना है।"[18] यह आदर्श वाक्य ही भारतीय नारी के पथ को आलोकित करता हुआ उसके जीवन का एक अनुपममूल्य बनता है। भारतीय नारी अपने पति की पसंद का ही देखना-सुनना पसंद करती है। उसके पति के अनुरूप उसका जीवन चलता है। आज के संदर्भ में जितने भी तलाक के

मामले देखने, सुनने में आ रहे हैं, उनके पीछे हमारी पातिव्रत्यऔर पत्निव्रत धर्म की अवहेलना ही मुख्य कारण है।

हाल ही में मुंबई में हुए सुशांत सिंह राजपूत के आत्महत्या वाले प्रकरण में एक कारण हमारी विवाह व्यवस्था की अवहेलना ही तो छुपी हुई है। लिव-इन-रिलेशनशिप हमारी परंपरा का हिस्सा नहीं हैं। होना तो यह चाहिए, कि स्त्री-पुरुष दोनों पतिव्रत-पत्नीव्रत धर्म का समान रूप से पालन करें, जिससे परिवार मेंतथासमाज में टूटने की अथवा बिखराव की स्थिति उत्पन्न नहीं हो। हमारी सनातन संस्कृति द्वारा प्रतिष्ठित पतिव्रत और पत्निव्रत धर्मनारी व पुरुष दोनों के लिए सर्वथा प्रेरणीय जीवन मूल्य है।

भारतीय पुरुष के लिए एकपत्नीव्रतधर्म रूपी जीवन-मूल्य हमारी संस्कृति में प्रतिष्ठित है। जिस प्रकार भारतीय नारी अपने संकल्प से एकपतिव्रतधर्म की पालना करती है, ठीक उसी प्रकार से एक भारतीय पुरुष का जीवन का मूल्य है, कि वह भी अपने जीवन में एकपत्नीव्रतधर्म का पालन करे।

मृदुला सिन्हा सीता (भारतीय नारी) से प्रश्न करवाती हैं– "पुरुषों के लिए पत्नीव्रत का आदर्श है या नही? और इसका उत्तर स्वयं श्रीराम (भारतीय पुरुष) देते हैं- हाँ-हाँ, पुरुषों के लिए भी एक पत्नीव्रत का ही आदर्श है।"[19]भारतीय पुरुष का यह जीवन-मूल्य हमारे परिवार की संकल्पना को मजबूत करता है। परस्पर पति-पत्नी के बीच विश्वास की दीवार को मजबूत करता है। एक लंबे साहचर्य जीवन की नींव भी रखता है। गृहस्थ धर्म का मूल्य है- पति द्वारा एकपत्नीव्रतधर्म का पालन और पत्नी द्वारा पातिव्रत्य धर्म का पालन।

मानवजीवन का यह मूल्य आज भी समाज के लिए वरदान है। समाज के प्रत्येक परिवार में पति-पत्नी द्वारा इसका पालन करना अति आवश्यक है, जिससे हमारे बीच मर्यादा, संयम, अनुशासन और सत्यनिष्ठा जैसे आदर्श स्थापित होंगे।

जिंदगी सुख-दु:ख का रेला है। संगम है सुख-दु:ख का। कभी सुख की घडी आती है कभी दु:ख की। यह शाश्वत नियम है। इसमें परिवर्तन की लहर चलती ही रहती है। मनुष्य को सुख-दु:खों के बीच समभाव से जीवन को आनंदपूर्वक जीना चहिए। इसके लिए उसके मन की सम स्थिति का होना आवश्यक है।

भारतीय विचारपरम्परा में मनुष्य को सुख-दु:ख के बीच समभाव से रहने का जीवन-मूल्य निहित है। यदि मनुष्य प्रत्येक परिस्थिति में सम बना रहे, तो उसे किसी भी प्रकार की मन:-स्थिति विचलित नहीं कर सकती।

मृदुला सिन्हा सीता के चरित्र के माध्यमसे भारतीय नारी के लिये सभी परिस्थितियों में सम रहने का मूल्य स्थापित करती हैं। राजमहलों में रहनेवाली सीता वन्यजीवन को समभाव से भोगती हैं।रावण द्वारा हरण किए जाने पर भी लंका में भय और आतंक के बीच श्रीराम को स्मरण करती

हुई रहती हैं। भयावह से भयावह परिस्थिति में भी समभाव से रहकर अपने सत को बताए रखती हैं। यह भारतीय नारी का सत ही है, जो उसे कठिन से कठिन परिस्थिति में भी समभाव बनाए रखने के लिये बाध्य करता है। इसलिए आवश्यक है कि हम भी अपने जीवन को समभाव से आनंदित होकर जिएँ।

'बूँद-बूँद से घडा भरता है।''एक और एक ग्यारह होते हैं।' ऐसी तमाम भावनाओं के आदर्श को स्थापित करने वाली पंक्तियाँ संगठन की शक्ति को प्रदर्शित करती हैं। कहा भी गया है कि'संगठन में शक्ति होती है।'

मनुष्य का अस्तित्व समाज में साथ-साथ मिल-जुल कर रहने से है। समाज में रहकर ही मनुष्य में सामूहिक कार्यभावना का विकास होता है। एकता की भावना को बल मिलता है। मानवता का परिचय भी साथ-साथ हिल-मिलकर रहने मेंतथापरस्पर एक-दूसरे का सुख-दु:ख बाँटने में निहित है।

मृदुला सिन्हा भी इसी एकता की भावना रूपी जीवन-मूल्य को स्थापित करती हुई कहती हैं - "जब कोई समाज समूह में सोचता, विचारता और व्यवहार करता है, तो उसकी शक्ति बढ़ जाती है। उसके संकल्प पूरे होते हैं।"[20] समाज का पुरुषार्थ भी एक रहने में ही निहित होता है। आज के संदर्भ में जो भी समस्या राष्ट्र के सामने मुँह ऊँचा किये खडी है, उन सभी समस्याओं का हल एकता की भावना से ही संभव है। मनुष्य अपनी विचारशक्ति को केंद्रित और संगठित करके प्रयोग में लाए तो असंभव कार्य भी संभव हो सकता है।

आज विश्व के सामने पर्यावरण-संकट एक चुनौती के रूप में विद्यमान है। नित-नवीन किए जाने वाले आविष्कारों,औद्योगीकरण एवं मानवीय असजगता-लापरवाही ने पर्यावरण-प्रदूषण का संकट खड़ा कर दिया है। लगातार वृक्षों का ह्रास हो रहा है। ओजोन परत का क्षय होता जा रहा है, जिससे धरती का तापमान बढ़ रहा है। ग्लेशियर पिघल रहे हैं। समुद्रों का विस्तार होता जा रहा है। ये सभी समस्याएँ पर्यावरण में विद्यमान विसंगतियों के कारण उत्पन्न हो रही हैं। वर्तमान में 2020 की शुरुआत से ही पूरी दुनिया, भारत कोरोना महामारी की चपेट में है। इस आपदा ने हमें पर्यावरण के साथ संतुलन-साहचर्य भाव का अद्‌भुत पाठ पढ़ाया है। भविष्य में जब इस महामारी के वास्तविक कारणों की जाँच-पड़ताल हमारे सामने आयेगी, तब हमारी महत्वाकांक्षा और पर्यावरण के प्रति लापरवाही इसमें एक बड़ा कारण निकलेगा।हम एक-एक पेड़ भी उगाने का संकल्प अपने जीवन में लें, तो विद्यमान पर्यावरण संकट को काफी हद तक दूर कर सकते हैं।

मृदुला सिन्हाने इसी संकट को महसूस करते हुए सीता के दैनिक कार्यकलापों के माध्यमसेवृक्षारोपण को अनुभूत किया है-"पौधो में पानी देना, उनकी सूखी पत्तियाँ चुनना, लताओं के बीच या उनसे बनी छत के नीचे खड़े होकर उनका घनत्व निहारना मुझे सुखद लगता था।"[21]

मृदुला सिन्हा का 'सीता पुनि बोली' उपन्यास आत्मकथा रूप में नारीत्वएवंमातृत्व की प्रतिष्ठा करता है, जिसके लिए पहले कन्या का विवाह जरूरी होता है। माता पिता के लिए बेटियाँ विशेष होती हैं। वे अपनी बेटी के लिए योग्य वर की तलाश करके उसका विवाह रचाते है। बेटियों का विवाह करके माता-पिता कन्यादान का पुण्य कमाते हैं।मृदुला सिन्हाइस पारिवरिक जीवन-मूल्य को रेखांकित करते हुये सीता स्वयंवर के समय कहती हैं-"शीतल मन का राजकुमार एक दिन हमारे द्वार आएगा, धनुष भंग करेगा। आपको कन्यादान का पुण्य मिलेगा।"[22]

आज देखने में आ रहा है कि दिन-प्रतिदिन समाचार-पत्रों की सुर्खियों में कन्याभ्रूण हत्या की खबरें भारतीय परिवार की अवधारणा पर अंगुली उठा रही हैं। इस कन्याभ्रूणहत्या के पाप को रोकने के लिए कन्यादान का महत्त्व लोगों के समझ में आना जरूरी है।

कन्यादान को व्यक्ति (माता-पिता) अपने जीवन में एक मूल्य की तरह स्थापित करें, जिससे कन्याभ्रूणहत्या का दंश समाज के बीच आतंक नहीं फैला पाए। सभी माता-पिता बेटा-बेटी को न केवल समान भाव से रखें-समझें; बल्कि बेटी को विशेष शक्तिसंपन्न होने के कारण ज्यादा महत्त्व प्रदान करें। हमारे यहाँ बिना स्त्री (गृहिणी) के घर की कल्पना नहीं की जा सकती। स्त्री है तो घर है। वेद वाक्य है- "गृहिणी ही घर है।" जब स्त्री का इतना महत्त्व हमारी सनातन संस्कृति में स्थापित है, तो क्यों कन्याभ्रूणहत्या पर हम रोक नहीं लगाएँ? कन्या (बेटी) लक्ष्मी का रूप होती है। उसके जन्म-उत्सव पर भी बधावा गाया जाना चाहिए। बिनालड़की के परिवार की संकल्पना नहीं की जा सकती।

उत्साह से मनुष्यजीवन संचालित होता है। कठिन से कठिन कार्य को सरलता में ढालने के लिए मनुष्य के पास उत्साह भाव का होना जरुरी होता है। उत्साह हमारे सभी कार्यों का प्रेरक भी होता है। बिना उत्साह के मानवजीवन में गति नहीं आती। मृदुला सिन्हा'उत्साह' के बारे में कहती हैं- "उत्साह मनुष्य के अंदर उमंग का संचार करता है।"[23]सच भी है, कि जब तक हमारे अंदर उत्साह भाव नहीं होगा, जीवन में उमंग और उल्लास की लहर नहीं आ सकती। बिना उमंग और उल्लास के जीवन नीरस हो जाता है, इसलिए जरूरी है कि मनुष्य आज के इस प्रतिस्पर्द्धी युग में उत्साह से कार्य करे और जीवन में उमंग और उल्लास का संचार कर जीवन को सार्थक बनाये।

माता-पिता को बेटा-बेटी तो प्रिय होते हैं; परन्तु जब बेटी का विवाह हो जाता है तब बेटी का पति उनका अधिक स्नेहपात्र बन जाता है। आखिर वो उनकी बेटी का सुहाग जो है। बेटी का विवाह के पश्चात् सुहाग के बिना कोई अस्तित्व भी नहीं होता। इसलिए ससुराल पक्ष में (लड़के के) या लड़की के मायके में अधिक स्नेह तो दामाद को ही मिलता है।

मृदुला सिन्हाइस बारे में कहती हैं–"दामाद तो बेटी से भी अधिक प्रिय होता है।"[24]आज भी हमारे समाज में बेटी के विवाह के पश्चात् दामाद पर ज्यादा स्नेह-प्यार ससुराल वालों का होता है।

श्रीराम ने भी जब सीता-स्वयंवर में धनुष-भंग करके सीता को वरमाला पहनाई, तब से वे राजा जनक (ससुर) के यहाँ विशेष स्नेह के पात्र हो गए।

भारतीय विचार परंपरा के मूल्यों का बोध करवाता 'सीता पुनि बोली' उपन्यास आत्मकथ्यात्मक शैली का एक अनूठा उपन्यास है। आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में भारतीय पौराणिक स्त्री पात्रोंपर आत्मकथ्यात्मक शैली से लिखा गया यह उपन्यास अपनी शैली,सांवेगिकता और सरसता से हृदयस्पर्शी बन पड़ा है। परिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्यों को रेखांकित-विश्लेषित करता यह उपन्यास सीता माँ के चरितको भारतीय स्त्री के आदर्श, स्वाभिमान और आत्मसंबल के रूप में चित्रित करता है।

भारतीय समाज की लोक और शास्त्रीय परंपरा में राम कथा और सीता माँ जनमानस की आस्था और विश्वास के सेतु हैं। जिसके सहारे भारतीय जनमानस अपने जीवन संघर्षों का बड़ी मजबूती से सामना भी करता है और जीवन मार्ग में आने वाली चुनौतियों पर विजय भी हासिल करता है। यही साहित्य लेखन की सार्थकता है, जिसे मृदुला सिन्हा ने 'सीता पुनि बोली' उपन्यास के माध्यम से हिन्दी पाठक समाज के सामने प्रस्तुत किया है।

मृदुला सिन्हा के लेखन के मायने ही भारतीय परंपरा के मूल्य बोध से है। वे भारतीयता को जीती हैं और उसे जीते हुए साहित्य के पन्नों में उकेरती हैं। हमारे पौराणिक मिथों से भारतीय अस्मिता को चिन्हित कर उसे लोक स्वीकार्यता की भाव भूमि पर स्थापित करना साहित्य का एक आयाम है। 'सीता पुनि बोली' उपन्यास इसी आयाम को बड़े पैमाने तक जनमानस तक पहुंचाने में अपनी भूमिका का निर्वाह करता है – अपनी मूल्यधर्मिता के साथ।

****

संदर्भ:

1. मृदुला सिन्हा,सीता पुनि बोली (उपन्यास), विद्या विहार प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृ.सं. – 7
2. वही, पृ.सं. - 97
3. वही, पृ.सं. - 194
4. वही, पृ.सं. - 293
5. वही, पृ.सं. - 106
6. वही, पृ.सं. - 240-241
7. वही, पृ.सं. - 193
8. वही, पृ.सं. - 210
9. वही, पृ.सं. - 93

10. गोस्वामी तुलसीदास,रामचरित मानस, गीतप्रेस गोरखपुर,पृ.सं. - 721-722

11. मृदुला सिन्हा,सीता पुनि बोली (उपन्यास), विद्या विहार प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृ.सं. – 37

12. वही, पृ.सं. - 43

13. वही, पृ.सं. - 11

14. गोस्वामी तुलसीदास,रामचरित मानस,गीताप्रेस गोरखपुर, पृ.सं. – 286

15. मृदुला सिन्हा,सीता पुनि बोली (उपन्यास), विद्या विहार प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृ.सं. – 83

16. वही, पृ.सं. - 10

17. वही, पृ.सं. - 11

18. वही, पृ.सं. - 38

19. वही, पृ.सं. - 69

20. वही, पृ.सं. - 46

21. वही, पृ.सं. - 19

22. वही, पृ.सं. - 34

23. वही, पृ.सं. - 100

24. वही, पृ.सं. - 43